आलंकार द्वितीय वर्ष (क्रियात्मक)

पूर्णांक:300, (**क्रियात्मक** 200+ **मंचप्रदर्शन** 100)

न्यूनतम:155

(तबले के विद्यार्थी के लिए)

सूचना: संगीत अलंकार के अंतिम वर्ष की परीक्षा मे स्वतंत्र वादन मुख्य विषय के रूप में तथा साथ संगत यह सहायक विषय होगा| विद्यार्थी को गायन, तंतु वाद्य तथा कथक नृत्य में से किसी एक विधा की संगति को चुनना होगा, जिसका उल्लेख विद्यार्थी अपने परीक्षा आवेदन प्रपत्र में करेंगे|

1) त्रिताल

अ) दिल्ली या फर्रूखाबाद घराने के पेशकार का विस्तृत वादन|

ब) एक खंड तथा एक मिश्र जाति का कायदा, छः पल्टो के साथ|

क) पूर्ण संकल्पित रचनाओं में से उठान, आमद, फरद टुकडे, फरमाईशी चक्रदार, कमाली चक्रदार, मंझेदार गत, दर्जेदार गत के एक-एक उदाहरण को हाथ से ताली देकर बोलना तथा बजाना|

ड) फर्रूखाबाद, लखनौ, बनारस तथा पंजाब इन घरानों की विशेषतायें प्रकट करने वाली गतों का वादन|

2) अन्य ताल

(अ) मत्त(9 मात्रा), रूद्र(11 मात्रा), जयताल(13 मात्रा) इन तालों में पेशकार(फरशबंदीयुक्त) तिस्र तथा चतुस्र जाति के दो कायदे, दो रेले, (छह पलटों के साथ) तथा कम से कम छह गत-टुकडे बजाना|

3) अपने वाद्य के अतिरिक्त किसी अन्य अवनध्द वाद्य की वादन पद्धति की जानकारी तथा वादन करने की क्षमता प्रदर्शित करना|

4) साथ संगत:

सूचना: इसविषय के सभी विद्यार्थियों में तबला और तानपुरा स्वर में मिलाने की क्षमता होना अनिवार्य है|

i) गायन की संगत:

अ) झूमरा, आडाचौताल, तिलवाडा इन तालों में विलंबित लय में वजनदार तथा लयदार ठेका बजाना तथा इन ठेकों में ठेका भरी युक्त वादन और मुखडे, टुकडे बजाकर सम पर आने की क्षमता|

ब) मध्यलय में संगत करते समय विभिन्न आकर्षक मुखडों का प्रयोग करने की क्षमता|

क) उप- शास्त्रीय गायन की संगति में (दीपचंदी, कहरवा, दादरा) गायन अनुरूप तालों के ठेके बजाने की क्षमता तथा कलात्मक एवम् सौंदर्यपूर्ण लग्गियों का प्रयोग|

ii) तंतु वाद्य की साथ:

अ) त्रिताल, रूपक, झपताल तथा एकताल को द्रुत लय में तंतू वाद्य के अनुरूप बजाने की क्षमता|

ब) विलंबित त्रिताल में मसीतखानी या अन्य प्रकार की गत के साथ अलग-अलग मात्रा से उठने वाली विविध दमयुक्त तिहाईयों को बजाने की क्षमता|

क) उपज-अंग से साथ करने का प्रारंभिक ज्ञान|

ड) 'ना धिं धिं ना' को अतिद्रुत लय में विभिन्न निकास के साथ बजाने का अभ्यास|

iii) कत्थक नृत्य:

अ) कत्थक नृत्य में प्रदर्शित की जाने वाली न्यूनतम पाँच बंदिशों की पढंत करना तथा उनका तबले पर वादन करना|

ब) तीव्रा और सूलताल में न्यूनतम चार बंदिशों का थपियाँ बाज(पखावज अंग से) वादन करने की क्षमता|

क) कत्थक नृत्य के ततकार की अनुरूप साथ संगत एवम् द्रुत लय में अक्षरों के क्रम में परिवर्तन करते हुये न्यूनतम चार पल्टे बजाने की क्षमता|

ड) विभिन्न प्रकार की तिहाइयों का कत्थक नृत्य के अनुरूप वादन करने की क्षमता|

इ) कत्थक नृत्य के 'रस-भाव' प्रदर्शन में उचित से प्रभावकारी साथसंगत

मंच प्रदर्षन: (आमंत्रित श्रोताओं के सम्मुख परीक्षा आयोजित की जाए)

अ) त्रिताल में सम्पूर्ण स्वतंत्र वादन 30 मिनिट

ब) परीक्षक के निर्देशानुसार निम्नलिखित में से किसी एक ताल में संपूर्ण एकल वादन, (न्यूनतम 20 मिनिट)

रूपक, झपताल, एकताल, सवारी